3. हम भारत वासी

लेखक - आर. पी. निशंक

उन्मुखी करण प्रश्न ।

1. **नदियाँ किसमें विलीन होती हैं ?**

उ. नदियाँ समुद्र में जाकर विलीन हो जाती हैं ।

2. **इसमें किस-किस को एक बताया गया है ?**

उ. इस म धर्म, मानव एवं ईश्वर को एक बताया गया है ।

3. **'मानव जाति एक है ।' इस पर अपने विचार बताइए ।**

उ. धर्म - जाति, ऊँच-नीच का भेदभाव मनुष्य के द्वारा बनाया गया है। वास्तव में सभी मानव एक है । मनुष्य - मनुष्य में कोई अंतर नहीं है । सभी प्राणी ईश्वर की संतान हैं।

कविता का उद्देश्य : -

कविता शैली गीत आदि की रचना के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित कर उनमें देशभक्ति, त्याग, बन्धुत्व, विश्वशान्ति, अहिंसा समर्पण आदि सद्‌गुणों के विकास की प्रेरणा देना,वसुदैव कुटुम्बकंम की भावना को जगाना, विश्व शान्ति के प्रयत्न को साकार करना कविता का मुख्य उद्देश्य है।

कवि परिचय :

आर.पी निशंक आधुनिक साहित्यकारों में अपना विशिष्ट स्थान रखते है । इनकी रचनाओं का मुख्य उद्देश्य देश भक्ति है। समर्पण, नवंकुर, जीवन पथ, 'मातृभूमि के लिए' आपकी प्रसिध्द रचनाएँ है।

कविता की विशेषता : -

प्रस्तुत कविता देशभक्ति की भावना से प्रेरित है। तुकांत एवं प्रेरणार्थक क्रिया का प्रयोग है। बच्चों में सत्य, अहिंसा, त्याग, समर्पण की भावना का विकास करके विश्वबंधुत्व एवं विश्वशान्ति की ओर बढने की प्रेरणा दी गई है।

शब्दार्थ :

पावनधाम	-	पवित्र स्थान	अद्‌भुत	-	अनोखा
दृश्य	-	चित्र	नफरत	-	व्देष, घृणा
कुहासा	-	कोहरा, कुहरा	सरसाना	-	रसपूर्ण (हरा भरा) करना
निराशा	-	आशाहीन	उलझन	-	समस्या मे फंसे
तथ्यदीप	-	सच्चाई (यथार्थ) का दीपक (प्रकाश)			
जीवन पथ	-	जीवन के रास्ते	जीवन ज्योत	-	जीने की आशा
महकाना	-	सुगंधित करना	बगिया	-	उपवन, बगीचा
क्लेश	-	दु:ख	समर्पण	-	समर्पित होने की भावना
मूल	-	मौलिक	श्रध्दा	-	

अस्था, सम्मान आदर की मावना

विश्वबन्धुत्व - विश्व मैत्री / दुनिया से मित्रता का भाव

प्रश्न :

1. **हमें अपने जीवन में कैसा पथ अपनाना चाहिए ?**

उ. हमें सत्य, अहिंसा, त्याग और समर्पण की भावना से प्रेरित होकर ऐसे जीवन पथ को अपनाना है जो विश्वबन्धुत्व विश्वशान्ति के मार्ग पर ले जाए ।

2. **हम भटकने वालों को राह कैसे दिखा सकते हैं ?**

उ. जीवन का यथार्थ (सच्चाई) बता कर राह से भटकने वालों को सही राह दिखा सकते है।

Sakshieducation.com

3. **सत्य, अहिंसा त्याग और समर्पण की बगिया महकाने के लिए हम क्या-क्या कर सकते हैं ?**

उ.

मन में श्रद्धा, प्रेम और विश्वास के साथ हम दुनिया को विश्वबन्धुत्व एवं विश्वशान्ति का पाठ पढाकर संसार से सारे दुःखों, क्लेश को मिटा कर धरती को स्वर्ग एवं उपवन बना येंगे ।

4. **विश्वबन्धुत्व की भावना सारी दुनिया में आचरण में लाने के लिए आप क्या-क्या करना चाहेंगे ?**

उ. ऊँच नीच का भेद मिटायेंगे, नफरत का कोहरा हटाकर, निराशा को दूर करेंगे । उनमें प्यार, आशा एवं विश्वास का दीप जलायेंगे । दुनिया के दुःखों को दूर करेंगे और इस धरती को स्वर्ग बनाकर विश्वशान्ति एवं विश्वबन्धुत्व की भावना जगायेंगे ।

अर्थ ग्राह्यता प्रतिक्रिया प्रश्न :-

1. **यह गीत आपको कैसा लगा ? अपनी पसंद और नापसंद का कारण बताइए ।**

उ. यह गीत हमें बहुत अच्छा लगा है । इस गीत में आशा, प्रेम, विश्वास, सत्य,अहिंसा, त्याग एवं समर्पण की भावना जगाई गई है । जीवन की सच्चाई से प्रेरित होकर विश्व में शान्ति एवं बंधुत्व की भावना (समझाकर) का प्रसार करेंगे। इस में धरती को स्वर्ग वनाने की बात कही गई है । इन्हीं सब कारणों से गीत अच्छा लगा है ।

2. दुनिया को ''पावन धाम'' बनाने के लिए हम क्या क्या कर सकते हैं ?

उ. दुनिया को पावन धाम बनाने के लिए हम ऊँच नीच का भेदभाव त्याग देंगे।

व्देष, नफरत हिंसा को मन से निकाल कर सभी मानव को समान मान कर प्रेम,

त्याग, सत्य, अहिंसा, समर्पण एवं उदार मानवीय भावना से प्रेरित होकर कार्य करेंगे । सारे विश्व में शान्ति एवं बंधुत्वभाव का प्रचार करेंगें । इस प्रयत्न द्वारा दुनिया को पवित्र धाम बनाया जा सकेगा ।

(आ)

इ निम्नलिखित भाव से संबन्धित कविता की पंक्तियाँ पहचान कर लिखिए

1. संसार में व्याप्त सारे विवादों को मिटाकर, हम, धरती को स्वर्ग बनायेंगे ।

कविता : मन में श्रद्धा और प्रेम का अद्भुत दृश्य दिखायेंगे ।

सत्य, अहिंसा, त्याग, समर्पण की बगिया महकायेंगे ।

जग के सारे क्लेश मिटाकर, धरती को स्वर्ग बनायेंगे ।

विश्वबंन्धुत्व का मूल मंत्र हम, दुनिया में सरसायेंगे ।

2. **जीवन पथ से भटके लोगों को रास्ता दिखायेंगे ।**

कविता : उलझन में उलझे लोगों को, तथ्य दीप समझायेंगे ।

भटक रहे जो जीवन पथ से, उलको राह दिखायेंगे ।।

हम खुशियों के दीप जला, जीवनज्योत जलायेंगे ।

हम भारतवासी दुनिया को पावन धाम बनायेंगे ।।

3. **हम भेदभाव दूर करेंगे । हम सब मिल जुलकर रहेंगे ।**

कविता : ऊँच नोच का भेद मिटाकर, दिल में प्यार बसायेंगे ।

नफरत का हम तोड कुहासा, अमृत रस सरसायेंगे ।।

हम निराशा दूर भगाकर, फिर विश्वास जगायेंगे ।

अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता :-

(अ) तीन चार पंक्तियों में उत्तर लिखिए ।

1. उलझनों से बचे रहने के लिए हमें कैसी सावधानियाँ लेनी चाहिए ?

उ. उलझनों से बचे रहने के लिए हमें जीवन के यथार्थ (सच्चाई) को समझना होगा । आशा एवं खुशियों के दीपक जलाना होगा । निराशा, दुःख, अशान्ति को दूर करके जीवन की सच्चाई को समझते हुए आशा से आगे बढना होगा ।

2. निराशावादी और आशा वादी के स्वभाव में क्या अंतर होता है ?

उ. आशावादी व्यक्ति हर समस्या का साहस पूर्वक सामना करके उन पर सफलता पाता है। वह जिस के सम्पर्क में आयेगा उसे भी आशावादी बना देता है । लोग उस से प्रेरणा लेते हैं वह हर हाल (दशा) में सुखी रहता है । इसके विपरीत निराशावादी व्यक्ति अपना जीवन नष्ट कर देता है । वह दूसरों में भी निराशा उत्पन्न करता है । वह स्वयं समस्या को दावत देता है । जीवन में कभी सुखी नही रहता ।

(आ)

1. गीत में धरती को स्वर्ग बनाने की बात कही गयी है । हम इसमें क्या सहयोग दे सकते हैं ?

उ. धरती को स्वर्ग बनाने म हम यह सहयोग दे सकते है कि धरती के पर्यावरण की रक्षा करें । उसे प्रदूषण से बचाए। धरती पर शान्ति समभाव का प्रचार करें । भेदभाव दूर करें । नैतिक मूल्यों का विकास करें । सत्य, अंहिसा, त्याग एवं समर्पण की भावना को जगा कर धरती को स्वर्ग बना सकते हैं ।

(इ). विश्वशान्ति की राह में समर्पित किस महान व्यक्ति का साक्षात्कार आप लेना चाहेंगे ? साक्षात्कार में उनसे पूछे जाने वाले प्रश्नों की एक सूची तैयार कीजिए ?

उ. (विद्यार्थी व्दारा करवाया जाएगा।)

(ई) सत्य, अहिंसा त्याग आदि भावनाओं का हमारे जीवन में क्या महत्व है ?

उ. सत्य, अंहिसा, त्याग समर्पण आदि का हमारे जीवन में बडा महत्व है । भावनाएँ नैतिकता का अंग हैं । ये भावनाएँ व्यक्ति को सच्चरित्र बनाते है । आत्मविश्वास, संतोष बढाते है । इन भावनाओं के होने पर व्यक्ति सभी प्राणी मात्र से जुडता है। इन भावनाओंकी प्रेरणा से ही विश्वशान्ति एवं विश्वबंधुत्व स्थापित होता है। इन भावनाओं का विकास कर धरती को स्वर्ग बनाया जा सकता है और तब मानव भू ईश्वर बन जायेगा

भाषा की बात : -

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढिए और उसके अनुसार कीजिए ।

1. दुनिया अमृत, पावन (वाक्य प्रयोग कीजिए / पर्याय शब्द लिखिए ।

1. दुनिया, जग, जगत, संसार, सृष्टि

वा. यह दुनिया गोल है ।

2. अमृत - सुधा, पीयूष, अमि

वा. वर्षा की बूँद अमृत है ।

3. पावन - पवित्र, पाक, पुनीत

वा. भारत की पावन भूमि पर कई संतों का जन्म हुआ है ।

2. निराशा, त्याग, प्यार (विलोम शब्द लिखिए / वाक्य प्रयोग कीजिए)

1. निराशा × आशा वा. निराशा मनुष्य को असहाय बना देती है ।
2. त्याग × ग्रहण वा. देशभक्तों ने आजादी के लिए प्राण त्याग दिए।
3. प्यार × व्देष वा. माँ सभी बच्चों को प्यार से पालती है ।

3. खुशी, बगीचा भावना (वचन बदलिए /वाक्य प्रयोग कीजिए)

1. खुशी - खुशियाँ वा. खुशियाँ बाँटने से संतोष मिलता है ।
2. बगीचा - बगीचे वा. बगीचे में रंग बिरंगे फूल खिले हैं ।
3. भावना - भावनाएँ वा. हमें प्राणी मात्र के प्रति अच्छी भावना रखनी चाहिए।

(आ) सूचना पढिए और उसके अनुसार कीजिए ।

1. पवन, पावक, निराशा (सन्धिविच्छेद कोजिए)

1. पावक - पौ + अक = पावक (स्वर सन्धि / अयादि संधि)
2. पवन - पो + अन = पवन (स्वर सन्धि / अयादि संधि)
3. निराशा - निः + आशा = निराशा (विसर्ग सन्धि)

2. भारतवासी,जीवनज्योत (समास पहचानिए)

1. भारत के वासी - तत्पुरुष समास)
2. जीवन रूपी ज्योत (कर्म धारय समास)
3. जीवन की ज्योत (तत्पुरुष समास)

Sakshieducation.com

(इ) इन्हें समझिए :

1. खुशी, खुशियाँ, खुशियों (एक वचन, बहुवचन एवं वाक्य प्रयोग में खुशी शब्द का बहुवचन खुशियों के रूप में लिया गया है ।

2. भारतवासी भारतवासी भारतवासियों

2. बनना, बनाना - बनवाना

बनना क्रिया (मूलधात शब्द) है । बनाना सकर्मक क्रिया बनाने के लिए प्रयुक्त हुआ तो बनवाना प्रेरणार्थक क्रिया है जिसमें कार्य कर्ता द्वारा न करके दूसरे को कार्य करने की प्रेरणा देरहा है ।

देखना (क्रिया है) दिखाना (सकर्मक क्रिया है) और दिखवाना (प्रेरणार्थक क्रिया रूप है)

ई. नीचे दिया गया उदाहरण समझिए (उसके अनुसार दिये गए वाक्य बदलिए ।

1. भटक रहे जो जीवन पथ से उनको राह
   - दिखायेंगे (सामान्य भविष्य काल)
   - दिखाते रहेंगे (तात्कालिक अपूर्णभविष्य)
   - दिखा चुकेंगे (पूर्ण भूत काल)
   - दिखाएँ (संभाव्य भविष्य काल)

2. उलझन में उलझे लोगों को तथ्य दीप
   - समझायेंगे-(सामान्य भविष्य काल)
   - समझाते रहेंगे-**(तात्कालिक अपूर्णभविष्य)**
   - समझा चुकेंगे-(पूर्ण भूत काल)
   - समझाएँ- (संभाव्य भविष्य काल)

3. सत्य अहिंसा, त्याग और समर्पण की बगिया

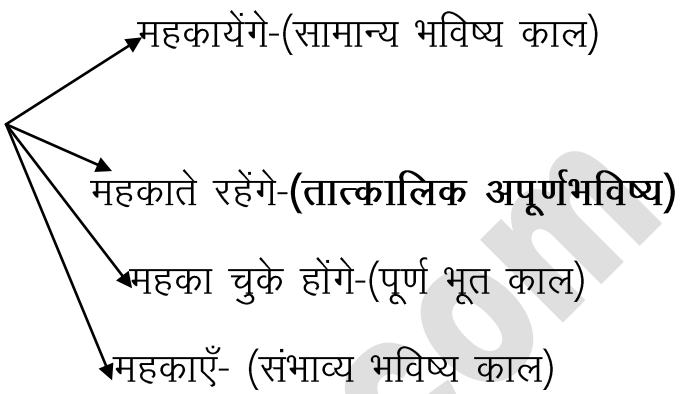

पाठ में आये हुए मुहावरों का अर्थ एवं उनका वाक्य प्रयोग

1. **भेद मिटाना = अन्तर समाप्त करना :**

वा. उनकी मित्रता ने अमीर - गरीब का भद मिटा-दिया ।

2. **प्यार बरसाना = प्यार / स्नेह को दर्शना**

वा. मौसी ने अपनी बहन के बच्चों पर इतना प्यार बरसाया कि सब चकित रह गए ।

3. **दूर भगाना = दूर कर देना**

वा. हमें अपने हृदय के डर को दूर भगा देना चाहिए ।

4. **विश्वास जगाना = भरोसा बढाना**

वा नौकर ने मालिक के मनमें इतना विश्वास जगाया कि मालिक ने अपनी दुकान उसे सौंप दी।

5. **राह दिखाना = रास्ता दिखाना -**

वा. माता पिता हमें सच्चाई की राह दिखाते हैं ।

6. **क्लेशमिटाना - दुःख हटाना**

वा. संतोष परिवार का क्लेश मिटाता है ।

उपवाचक - 1. शांति की राह में

प्रश्नोत्तर : -

1. शांति की परिभाषा क्या हो सकती है? अपने शब्दों में बताइए?

उ. मन को नियंत्रित कर उसे बुराई के रास्ते पर चलने से रोकना ही वास्तविक 'शांति' है। मानसिक सुख की प्राप्ति ही शांति है। यदि हमारे पास दुनिया का सारा वैभव और सुख साधन उपलब्ध है परंतु शांति नही है तो वैसे सुख साधन व्यर्थ है। यदि शान्ति एवं संतोष है तो हमारे दुःख पीडा, लालच एवं स्वार्थ का अपने आप ही अंत हो जाता है।

2. नेल्सन मंडेला के जीवन से हमें क्या संदेश मिलता है?

उ. न्याय समानता और सम्मान के लिए किए जाने वाले संघर्ष के प्रतीक नेल्सन मंडेला का व्यक्तित्व हमारे लिए प्रेरणास्पद है उनका बलिदान इतना जबरदस्त था कि वे जगह-जगह मानवीय प्रगति के लिए लोगों को जो भी वे कर सके करने की प्रेरणा देते थे । हमारी दुनिया को अक्सर जो असहायता और निराशा घेर लेती उसके बिल्कुल विपरित उनके जीवन की कहानी है। इस प्रकार उनके जीवन से अन्याय, रंगभेद के विरूध्द आवाज उठाने, संघर्ष से लडने, अहिंसा, शांति, सेवाभाव भाईचारे का संदेश मिलता है।

3. मदर तेरेसा ने अपने जीवन में क्या सिद्ध कर दिखाया ?

उ.

मदर तेरेसा एक ऐसा नाम है, जो शांति, करुणा, प्रेम और वात्सल्य का पर्याय कहलाता है। मदर तेरेसा का सपना था कि अनाथों, गरीबो, और रोगियो की सेवा करना।उसके लिए उन्होंने

मिशनरीज ऑफ चारिटि और 'निर्मल हृदय' नामक संस्थाओं की स्थपना की। उन्होंने अपना सारा जीवन गरीब, अनाथ और बीमार लोगोकी सेवा करते हुए बिताया। उन्हेने सिध्द कर दिखाया कि दुखियो की सहायता से बडाकोई धर्म नहीं है। मानव सेवा करने के कोई अपना- पराया देश नही है। अनथो, गरीबो,रोगियो की सेवा ही सही अर्थ में जीवन की सार्थकता है।

प्र.4. प्रार्थना करने वाले होठों से कही अच्छे सहायता करने वाले हाथ है।

उ.मानव सेवा ही माधव सेवा है। दीन-दु:खियो की सेवा ही भगवान की सेवा और आराधना होती है। ईश्वर ने हमें दूसरों की सहायता करने के लिए जन्म दिया है। हमें ईश्वर ने बनाया है। अतः उनकी संतान (मानव) की सेवा करना हम सबका कर्त्तव्य है। इसलिए भगवान का यश गानेवाले, मंत्र पढनेवाले होठों से गरीब, दीन-दुखियो की सेवा करने वाले हाथ ही अच्छे है। पवित्र है। धार्मिक स्थानों में प्रार्थना करने से बेहतर है कि हम समाज से बाहर निकलकर दुखियो की सेवा करें।

*****

sakshieducation.com